Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

भक्ति आंदोलन उत्पत्ति एवं विकास – एक समीक्षा

शांति भूषण सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास) सर्वोदय पी.जी. कॉलेज, सलोन, रायबरेली, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Article History
Accepted : 25 March 2024
Published : 05 April 2024

Publication Issue :
Volume 7, Issue 2
March-April-2024

Page Number : 107-110

शोध सारांश – भारत में भक्ति आंदोलन की जो वेद, महाकाव्य, पुराणों से ही निकलती दिखाई देती हैं, जो विविध क्षेत्रों में विभिन्न परिवर्तनों एवं प्रयोगों के साथ पुष्पित एवं पल्लवित होती हैं। भारत में भक्ति आंदोलन ने एक ऐसे समाज के निर्माण में योगदान दिया जहाँ प्रेम, समर्पण, सद्भाव के साथ जातीय भेदभाव, छुआछूत, लिंगीय विषमता को समाप्त करने का सफल प्रयास हुआ। इस आंदोलन ने क्षेत्रीय भाषा, स्थानीय बोली में गीतों एवं काव्यों की रचना कर उसे जनमानस तक पहुँचाया तथा गीत एवं संगीत के माध्यम से भारत के सांस्कृतिक विकास को एक निर्णायक दिशा दी।

मुख्य शब्द– भक्ति आंदोलन, महाकाव्य, पुराण, समाज, प्रेम, समर्पण, जनमानस।

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आंदोलन सर्वाधिक महत्वपूर्ण पड़ाव है, इस आंदोलन ने भारतीय लोगों के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में क्रांतिकारी सुधार एवं परिवर्तन का बीजारोपण किया। भक्ति शब्द संस्कृत के भज् धातु से बना है जिसका अर्थ सेवा करना अथवा भजन है। यह ईश्वर के प्रति प्रेम पूर्ण समर्पण, श्रद्धा, अटूट विश्वास एवं सेवा भाव को प्रदर्शित करता है।

उत्पत्ति – भक्ति आंदोलन के संदर्भ में इस बात पर बहु विवाद है कि इसका उदय कब, क्यों और कैसे हुआ। कतिपय बड़े विद्वानों का मत है कि भक्ति आंदोलन का उदय भारत पर मुस्लिम आक्रमण एवं उससे उत्पन्न चुनौती के निदान के रूप में हुआ। जिसका अभिप्राय यह है कि भारत पर इस्लाम की विजय ने भारतीय राजव्यवस्था को चौपट कर दिया। मुस्लिम क्रूरता, भेदभाव, उत्पीड़न से बचने का कोई साधन नहीं बचा ऐसे में केवल ईश्वर का सहारा ही रह गया। कतिपय विद्वान इसे इस्लाम के प्रभाव के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार सूफी मत एकेश्वरवाद, सामाजिक एकता तथा सहभोज से प्रभावित होकर भारत

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License.

में भक्ति आंदोलन का उदय हुआ। बालकृष्ण भट्ट जैसे विद्वान भक्ति काल की उपयोगिता का संबंध मुस्लिम चुनौती का सामना करने के रूप में देखते हैं। इनका मत है कि यह हिंदुओं में वह जोश एवं पौरुष नहीं उत्पन्न कर सका जिससे इस्लाम का सामना किया जा सके। इसके विपरीत इनका कहना है कि भक्ति ने हिंदू शक्ति का विनाश किया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने तो भक्ति को पराजित, असफल एवं निराश मनोवृत्ति की देन माना है। जिसका समर्थन बाबू गुलाब राय एवं डॉ0 रामकुमार वर्मा आदि विद्वानों ने भी किया है। इस संदर्भ में डॉ हजारी प्रसाद का यह मत तर्कसंगत लगता है कि यदि इस्लाम के कारण भक्ति आंदोलन पैदा होता तो वह सर्वप्रथम सिंध, पंजाब एवं उत्तर भारत में पैदा होता। प्रायः अब इस बात पर सहमति है कि भक्त की मूल धारा सुदूर दक्षिण में जिसे तमिल काम कहा जाता है में दूसरी शताब्दी से आठवीं शताब्दी के मध्य उत्पन्न एवं विकसित हुई। यह धीरे–धीरे दक्कन, कर्नाटक, महाराष्ट्र होते हुए उत्तर भारत में फैली। ब्रेकिंगटन नामक विद्वान के अनुसार तमिलनाडु में प्रारंभिक तमिल भक्ति आंदोलन की विशेषता देवता और भक्त के बीच एक व्यक्तिगत संबंध और ईश्वरीय कृपा के जवाब में उत्कट भावनात्मक अनुभव था। तमिलनाडु में भक्ति आंदोलन दो प्रमुख समानांतर समूहों द्वारा विकसित हुआ जिसे अलवार (वैष्णव) एवं नयनार (शैव) कहा जाता है। अलवार का शाब्दिक अर्थ ईश्वर में लीन होता है। अलवार संतों में 12 संत का विशेष उल्लेख है। अलवार संत विष्णु अथवा नारायण (तिरुमल) की पूजा करते थे यह संत एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हुए भगवान विष्णु की स्तुति गाते थे। इन गीतों को दिव्य प्रबन्धम् के रूप में संकलित किया गया है। अलवार संतों की तरह से नयनार भी भक्त कवि संत थे, जो शिव अथवा उनके पुत्र कार्तिकेय (मुरूगन) जैसे स्थानीय देवता की पूजा करते थे। 'तिरूमुरई' 63 नयनार संतों द्वारा शिव पर भजनों का संकलित प्रभावशाली ग्रंथ के रूप में विकसित हुआ। अलवार एवं नयनार पांचवी से नौवीं शताब्दी के बीच दक्षिण भारत में रहते थे। इन संतों ने व्यक्तिगत भगवान के प्रेम को बढ़ावा दिया जो अपने सभी मनुष्यों के प्रेम के रूप में व्यक्त होता है। इन संतों की घुमक्कड़ जीवन शैली ने मंदिर निर्माण और तीर्थ यात्रा को बढ़ाने में बड़ा योगदान किया। दक्षिण भारत में शंकराचार्य एवं रामानुजाचार्य ने इस भक्ति धारा को अत्यधिक प्रचलित, पुष्पित एवं पल्लवित किया।

शंकराचार्य 8वीं शताब्दी में दक्षिण भारत के केरल नामक क्षेत्र में पैदा हुए, इनके वास्तविक जीवन के बारे में विश्वसनीय जानकारी अत्यल्प है। आदि शंकराचार्य ने वेदांत की अद्वैत शाखा का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार ब्रम्ह एवं जीव दो नहीं एक ही है। ब्रह्म ही केवल सत्य है, जगत मिथ्या है, जीव व ब्रह्म एक है। इन्होंने भारत की दिग्विजय यात्रा कर विधि धर्मो एवं सिद्धान्त को मानने वालों से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया तथा चार प्रमुख हिन्दू पीठों की स्थापना करते हुए विपुल साहित्य की रचना की।

रामानुज दक्षिण में पैदा होने वाले एक हिन्दू संत, दार्शनिक और समाजसुधारक थे। इन्होंने वेदान्त की विशिष्टाद्वैत शाखा की स्थापना की। विशिष्टाद्वैत के अनुसार ब्रह्म एवं आत्मा एक होते हुए भी अंश एवं अंशी के समान हैं। अंशी कभी अंश नहीं हो सकता, किन्तु भक्ति एवं समर्पण से अथवचा नवधा भक्ति के माध्यम से सर्वोच्च कड़ी सायुज्य तक पहुँच सकता है। इनकी प्रमुख रचना वेदार्थ संग्रह, श्रीभाष्य (ब्रह्म सुत्र भाष्य) एवं भगवत गीता भाष्य है। रामानुज आचार्य ने भारत भर की यात्रा की तथा भक्ति आन्दोलन को एक महत्वूपर्ण गति प्रदान की।

भक्ति आंदोलन का विकास – दक्षिण भारत से भक्ति आंदोलन निकाल कर 18वीं शताब्दी तक धीरे–धीरे किंतु क्रमिक रूप से संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में फैल गया। कन्नड़ भाषी क्षेत्र जिसे आज कर्नाटक कहा जाता है, में भक्ति आंदोलन 12वीं शताब्दी में गतिशील होता दिखाई देता है। यहाँ वासव अथवा वसव नमक संत का उदय हुआ। इन्होंने जातीय भेद एवं वेदों की प्रमाणिकता पर अविश्वास जताया। इनके अनुयाई को लिंगायत कहा जाता है, क्योंकि पूजा हेतु ध्यान केंद्रित करने के लिए एक छोटे लिंगम शिव प्रतीक को अपने गले में लटकाए रहते थे। वर्तमान कर्नाटक में लिंगायत वर्ग आज भी प्रभावशाली सामाजिक समूह है। इसी क्षेत्र में माधवाचार्य नामक संत हुए जो वेदांत के महान विद्वान थे। माधवाचार्य ने द्वैतवाद के धर्मशास्त्र की नींव रखी।

उड़ीसा या उत्कल क्षेत्र में भक्ति आंदोलन जिसे ज्ञान मिश्रित अथवा अध्या भक्ति के रूप में जाना जाता है, 12वीं शताब्दी में शुरू हुआ। उड़ीसा में भक्ति आंदोलन को प्रचलित करने का श्रेय जयदेव (गीत गोविन्द) सहित विभिन्न विद्वान संतो को जाता है, इन संतों के प्रयासों से उड़ीसा में संकीर्तन के माध्यम से भक्ति का प्रचार–प्रसार हुआ और आगे चलकर जगन्नाथ मन्दिर भक्ति आंदोलन का केंद्र बना। कर्नाटक क्षेत्र से आगे बढ़ता हुआ यह आंदोलन महाराष्ट्र की भूमि पर पहुँचा। महाराष्ट्र में नामदेव एकनाथ ज्ञानेश्वर ने भक्ति आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया। इन संतो ने पंढरपुर में विट्ठल (बिठोबा) की पूजा शुरू की। इन संतों की दिनचर्या भक्ति गीतों को गाते हुए, तीर्थ यात्रा करते हुए लोगों में ईश्वर के प्रति प्रेम, आपसी सद्भाव को बढ़ावा देने वाले संदेश दिये। आगे चलकर इस भक्ति आन्दोलन को संत तुकाराम एवं रामदास ने महाराष्ट्र के घर–घर में प्रचलित किया। महाराष्ट्र में संत आंदोलन वारकरी एवं धरकरी संप्रदाय में विभक्त हुआ।

असम में शंकर देव ने भक्ति आंदोलन को आगे बढ़ाया। शंकरदेव ने आसामी एवं मैथिली के संयोजन से ब्रज्जावली नामक कृत्रिम साहित्यिक भाषा द्वारा आंदोलन का प्रचार–प्रसार किया। उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के दो केंद काशी एवं मथुरा (वृंदावन) सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए। उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन शैव वैष्णव की जगह राम एवं कृष्ण भक्ति शाखा के रूप में दिखाई देता है। काशी क्षेत्र में रामानंद राम भक्ति धारा के संत हुए। इन्होंने रामान्दी सम्प्रदाय की स्थापना की। काशी को केन्द्र बनाकर

राम भक्ति धारा को आगे बढ़ाया। इन्होंने जातीय भेतभाव किय बिना सबको अपना शिष्य बनाया। रामानन्द के प्रभावशाली शिष्यों में 12 पुरूष एवं 02 महिला कवि सन्त शामिल थे, जिनमें पीपा, कबीर, रविदास, सेन, धन्ना, आदि प्रमुख थे। तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना कर उत्तर भारत में राम कीर्तन एवं भक्ति को जन–जन तक पहुंचाया। जबकि वृंदावन में बल्लभाचार्य ने कृष्ण भक्ति का प्रचार–प्रसार किया। वहीं हरिदास सूरदास मीरा के भजन एवं गीतों ने भारतीय जनमानस के कण–कण में कृष्ण भक्ति को बढ़ाया। इन संतों के अतिरिक्त रविदास, दादू, पीपा, कुंभन आदि संतों ने इस आंदोलन को मजबूती प्रदान की तथा इसका प्रसार उच्च वर्ण के अतिरिक्त निम्न वर्गों तक पहुँचाया। बंगाल में चैतन्य महाप्रभु ने संकीर्तन एवं नाचते–गाते हुए भगवान भक्ति को प्रचलित किया। इस आंदोलन की परिणति गुरु नानक द्वारा स्थापित सिख धर्म में देखी जा सकती है। गुरु वाणी में विभिन्न भक्ति संतों के गीत एवं भजन संग्रहीत हैं। सिख धर्म आगे चलकर एक सशक्त भेदभाव रहित समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है।

अंततः हम कह सकते हैं कि भारत में भक्ति आंदोलन की जो वेद, महाकाव्य, पुराणों से ही निकलती दिखाई देती हैं, जो विविध क्षेत्रों में विभिन्न परिवर्तनों एवं प्रयोगों के साथ पुष्पित एवं पल्लवित होती हैं। भारत में भक्ति आंदोलन ने एक ऐसे समाज के निर्माण में योगदान दिया जहाँ प्रेम, समर्पण, सद्भाव के साथ जातीय भेदभाव, छुआछूत, लिंगीय विषमता को समाप्त करने का सफल प्रयास हुआ। इस आंदोलन ने क्षेत्रीय भाषा, स्थानीय बोली में गीतों एवं काव्यों की रचना कर उसे जनमानस तक पहुँचाया तथा गीत एवं संगीत के माध्यम से भारत के सांस्कृतिक विकास को एक निर्णायक दिशा दी।

संदर्भ ग्रंथ

1. निर्मल दास – आदि ग्रंथ से संतों के गीत।
2. केरेन पेचालिस – भक्ति का अवतार, भक्ति परंपराएं
3. इंदिरा विश्वनाथन पीटरसन – शिव को कविताएं तमिल संतों के भजन
4. जे ब्रेकिंगटन – द सैक्रेड थ्रेड हिंदुइज्म इन इट्स कंटिन्यूटी एंड डाइवर्सिटी
5. महेश्वर नियोग – असम में वैष्णव आस्था और आंदोलन का इतिहास
6. रेखा पांडे – हृदय से निकली दिव्या ध्वनियाँ।
7. सुरेन्द्र नाथ दास गुप्ता – रामानुज जीवनी
8. नाका मुराहाजीमे– प्रारम्भिक वेदान्त दर्शन का इतिहास।